पत्ते चिनार के और कश्मीर का पर्यटन

डॉ. किशोर पंवार

इन दिनों कश्मीर में प्राकृतिक सौन्दर्य अपने चरम पर है। कहीं चिनार के पत्ते झड़ रहे हैं तो कहीं बर्फ। ठंड के महीनों में कश्मीर में हवा से एकदम सफेद बर्फ गिरती है और चिनार के पेड़ों से रंग-बिरंगे पत्ते झड़ते है। चिनार के पत्तों और पेड़ों के अद्‌भुत रंग-संयोजन वाले चित्र समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हो रहे हैं।

चिनार के पत्तों की रचना व रंग बेमिसाल हैं। और चिनार के पतझड़ी पत्तों का तो कहना ही क्या। इसके पतझड़ी पत्तों को देख ऐसा लगता है कि इन पर रंग और नूर की बारात उतर आई है। जो पत्तियां बारिश में चमकदार हरी थीं वे अब ठंड से सुनहरी पीली, चेरी रेड और जैतूनी-हरी-पीली हो चली हैं। इसकी पत्तियों का रूप थोड़ा-थोड़ा मेपल की पत्तियों जैसा होता है। बस इसके पांच किनारे ज़रा ज़्यादा नुकीले और कंटीले किनारों वाले होते है। हथेली जैसी रचना से पांच शिराएं डंठल पर एक ही जगह से निकलती हैं।

ठंड के असर से जब पत्तियां लाल-पीली होने लगती हैं तब इन पर रंगों के जो तमाम शेड्स उभरते हैं वे इस पेड़ की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। दरअसल पतझड़ी जंगलों में शीत ऋतु जाते-जाते अधिकांश पेड़ों की पत्तियां झड़ जाती हैं। इसी तरह मैदानों में भी वसन्त आने के पहले सेमल, पलाश, टेवेबुआ, और गधापलाश जैसे कई पेड़ पत्ती विहीन हो जाते हैं। मैदानों में ही नहीं, ऐसा तो पहाड़ों पर पाए जाने वाले सदाबहार वनों में भी होता है।

पतझड़ में झड़ती पत्तियां अपना चिर-परिचित हरा रंग खो चुकी होती हैं। वे हरी से सुनहरी, पीली, मेहरून, लाल और गुलाबी हो जाती हैं। पतझड़ में उष्ण-कटिबंधीय जंगलों का सारा नज़ारा ही बदल जाता है। पृथ्वी के ये भू-भाग इस मौसम में ज़्यादा ही रंगीन नज़र आते हैं। ये रंगत फूलों के कारण नहीं बल्कि रंग बदलती पत्तियों के कारण होती है। पत्तों में नए रंग नहीं आते। वस्तुतः हरे रंग की अधिकता के कारण ये रंग छिपे हुए थे जो हरा रंग जाते ही अपना रंग दिखाते हैं।

युरोपीय देशों में पतझड़ के इस अद्‌भुत नज़ारे का आनंद उठाने के लिए भारी भीड़ उमड़ती है। पूर्वी उत्तरी अमरीका में पतझड़ का पर्यटन करोड़ों डॉलर की कमाई का ज़रिया है।

चिनार एक पतझड़ी पेड़ है। यह 20 मीटर तक ऊंचा होता है। इसकी दीर्घायु और चारों दिशाओं में फैलने वाला क्राऊन इसकी विशेषताएं हैं। मुगल काल के बाग-बगीचों में यह एक खास पेड़ रहा है। वनस्पति विज्ञानी इसे *प्लेटेनस ओरीएन्टेलिस* कहते हैं।

इसका प्राकृतिक वास स्थान युरेशिया से ईरान तक है। हालांकि यह तय करना ज़रा मुश्किल है कि यह हिन्दुस्तान में पूर्व में ही था या रशिया से लाया गया मगर आज तो यह हमारा अपना है।

चिनार के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए जब नेट खंगाला तो एक नई बात पता चली। आपने पीपल की पत्तियों पर लीफ पेंटिग तो देखी है। परन्तु चिनार के पत्तों पर तो बाकायदा लीफकार्विंग की जाती है। लाफिंग बुद्धा, क्राइस्ट, स्टेचू ऑफ लिबर्टी से लेकर ऊंटों के कारवां तक उकेरे गए हैं चिनार की पत्तियों पर।

चिनार की खूबसूरती और महत्व के चलते उसे जम्मू-कश्मीर में राज्य वृक्ष का दर्जा दिया गया है। वर्तमान में यह पेड़ अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। कश्मीर में इसे संरक्षित किया गया है। मगर दिलचस्प लेकिन दुखद बात यह है कि प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंहा की पुस्तक *हमारे वृक्ष* में इसका नाम तक नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***